महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

अंक - ११ | माह :- अक्तूबर से दिसम्बर | वर्ष २०२२ | विक्रमी संवत् २०७९

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

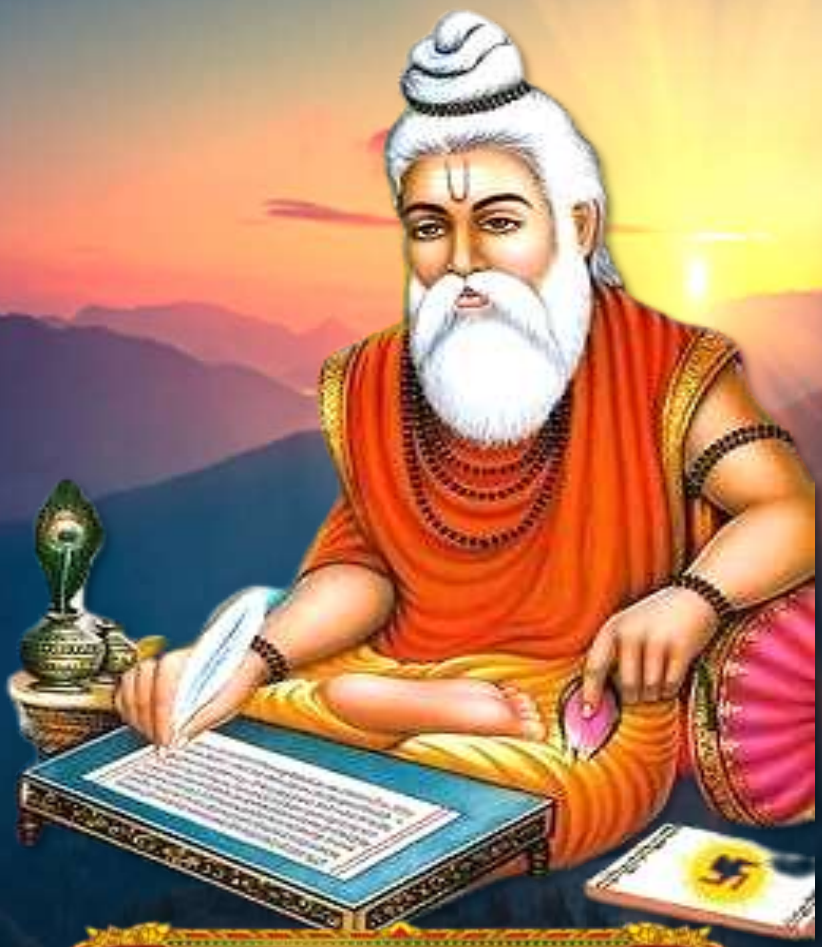

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री कंवरपाल गुर्जर
(माननीय शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. बृजकिशोर कुठियाल
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. गोविन्द बल्लभ
डॉ. शर्मिला

छात्र सम्पादिका

रजनी

ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

सम्पादकीयम्

भारतीयज्ञान-विज्ञानपरम्परायां ऐतिहासिकदृष्ट्या रामायण-महाभारतम् इत्यनयोः महती ख्यातिः वर्तते। रामायणं संस्कृतसाहित्यस्य आदिकाव्यं कथ्यते तथा च महाभारतं भारतीय ज्ञान-विज्ञानसाहित्ये महनीयप्रबन्धकाव्यरूपे प्रतिष्ठितमस्ति । महर्षिवाल्मीकिना समाजे आदर्शजीवनमूल्यानां प्रतिष्ठापना द्वारा समाजे महनीयकार्यं कृतम्। रामायणे स्थापितानि जीवनमूल्यानि अधुनाऽपि भारतीयसमाजे सर्वत्र दृश्यन्ते। भारतीयपरिवारजीवने यत्किमपि अधुना परिदृश्यते तत्सर्वं रामायणमहाकाव्ये वर्णितमूल्यानामाधारे एव वर्तते । न केवलं पारिवारिकजीवने अपितु राष्ट्रजीवनेऽपि आदर्शराज्यव्यवस्थायाः अनुपम उदाहरणः अत्र प्राप्यते । रामराज्ये ये आदर्शमूल्यानि स्थापितानि आसन् तेषामेव कल्पना अस्माकं राष्ट्रनिर्मातारः कृतवन्तः। अधुना आदर्शराज्यव्यवस्थायाः विषये रामराज्यस्य एव कल्पना क्रियते। अस्य कारणमस्ति यत् रामायणकाव्यधारितानि समग्रे देशे शताधिकानि रामायणग्रन्थानि विविधासु भाषासु लिखितानि वर्तन्ते। समाजे च तेषां पठनं पाठनं भवति। तेषु स्थापितानि जीवनमूल्यानि समाजे स्थापिताः स्युरिति कामना क्रियते।

अपरञ्च भारतीयइतिहासे महनीयं प्रबन्धकाव्यं महाभारतं वर्तते। महाभारतस्य विषये उच्यते हि यदिहास्ति तत् अन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्। महाभारते धर्मशास्त्रस्य विषयानि अपि प्राप्यन्ते। एतत् पञ्चमो वेदः इति नाम्नाऽपि ज्ञायते। महाभारतकर्तृणा महर्षिवेदव्यासेन एतस्य रचनां कृत्वा महनीय कार्यं कृतम्। अस्मिन् महाकाव्ये वेदव्यासेन विभिन्नानां कथनोपकथनमाध्यमेन भारतीय-आचार-व्यवहार, दर्शनं, समाजशास्त्रं, राजनीतिशास्त्रम्, न्यायशास्त्रम्, सैन्यशास्त्रञ्च सर्वेषां विषयाणां वर्णनं कृतमस्ति। अस्मिन् प्रबन्धकाव्ये भारतस्य शरीरस्य आत्मनः च विशद वर्णनं परिदृश्यते। महाभारते वर्णितं श्रीमद्भगवतगीता न केवलं भारतीयानामपितु समग्रेऽपि विश्वे स्वमहनीयकीर्तिना मानवचित्तान् प्रकाशयति। महाभारते भारतीयोन्नतविज्ञानप्रौद्योगिक्याः अपि परिचयं प्राप्यते। अस्मिन् भारतीय ज्ञान-विज्ञानयोः उन्नतपरम्परायाः विशदवर्णनं रामायममहाभारतग्रन्थयोः प्राप्यते एव। अस्य वर्तमानस्य सन्दर्भे अनुसंधानं कृत्वा पुनर्जीवनस्यावश्यकता प्रतीयते।

सम्पादक

विश्वविद्यालय में मनायी गयी महात्मा गाँधी जयंती

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में महात्मा गाँधी जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के सूत्रधार के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने शिरकत की। इस अवसर पर अध्यक्षा के रूप में प्रो. गीता सहारे (अध्यक्षा, महिला संघ), दिल्ली विश्वविद्यालय एवं मुख्यवक्ता प्रो. बलवान गौतम (विभाग, राजनीतिक विज्ञान) दिल्ली विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। प्रो. बलवान गौतम ने गाँधी जी की विचाधारा, उनके व्यक्तित्व एवं भारत की स्वतंत्रता में उनके योगदान के विषय में सभी विद्यार्थीयों को अवगत करवाया। वर्ष 1920-47 के मध्य होने वाले अनेक जन-आन्दोलनों का जनता को एकत्र कर सफल संचालन किया।

प्रो. गीता सहारे ने विद्यार्थियों को कवितामय पंक्तियों से गाँधी की विचारधारा से अवगत कराया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने सभी का अभिनन्दन करते हुए कहा कि भारतीय भूमि हमेशा से ही राजनीतिक और आर्थिक आन्दोलनों की भूमि रही है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय में मनाया गया वाल्मीकि जयन्ती समारोह

दिनांक 08.10.2022 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में महर्षि वाल्मीकि जी की जयन्ती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्यातिथि श्री कृष्ण कुमार बेदी जी (राजनीतिक सलाहकार, माननीय मुख्यमंत्री, हरियाणा) द्वारा किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष के रूप में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्यातिथि श्री कृष्ण कुमार बेदी जी ने कहा कि वाल्मीकि जी ने हजारों वर्षों पहले जिस रामायण की रचना की है उसकी महत्ता आज भी वैसी ही है। रामायण की रचना करके सम्पूर्ण विश्व को पारिवारिक तथा सामाजिक कर्त्तव्यों के साथ पवित्र समरसता का सन्देश दिया जो सर्वथा कालजयी है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी ने महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण को भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति का संविधान बताते हुए महर्षि की कृतियों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे माननीय मुख्यमंत्री के उद्देश्यों को बताते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय वैदिक सनातन संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अपनी विशेष भूमिका निभाते हुए हरियाणा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत तथा समस्त विश्व का सांस्कृतिक मार्गदर्शन करेगा।

अतः आज विश्वविद्यालय में महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ की स्थापना की गई है जिसमें महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित वाल्मीकि रामायण तथा वाल्मीकि जी पर रचित समस्त साहित्यों का एक स्थान पर संग्रह किया जाएगा। अंत में विश्वविद्यालय के शैक्षणिक सलाहार प्रो. भाग सिंह बोदला ने सभी अतिथियों का विश्वविद्यालय की ओर से धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में समस्त संकायाध्यक्ष, समस्त विभागाध्यक्ष अधिकारीगण, कर्मचारिगण तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग ने करवाई सूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय मुन्दड़ी कैथल के व्याकरण विभाग में 20 अक्टूबर, 2022 को सूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें व्याकरण विभाग के आचार्य एवं शास्त्री के विद्यार्थियों द्वारा भाग लिया गया। प्रतियोगिता में पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि, भर्तृहरि, नागेश भट्ट एवं कौण्ड भट्ट नामक कुल 6 दलों बनाए गे जिसमें से कौण्ड भट्ट दल ने प्रथम पुरस्कार, भर्तृहरि दल ने द्वितीय पुरस्कार तथा पाणिनि दल ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। व्याकरण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ सुरेंद्र पाल वत्स ने सभी छात्रों को सम्मानित किया तथा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रमेश चंद्र भारद्वाज जी ने बच्चों को आशीर्वाद एवं बधाई दी। इस अवसर पर विभाग के आचार्या डॉ. शर्मिला ने हर्ष व्यक्त किया।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

इतिहास विज्ञान है और विज्ञान कभी असत्य नहीं होता – कुलपति

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन दिनांक 09.10.2022 को प्रथम दिवस के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. संजीव कुमार शर्मा (पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिहार), अध्यक्ष के रूप में प्रो. वी.के. जैन (सेवानिवृत्त प्रो. इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय), एवं सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. नीलिमा दहिया (पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, एम. डी. यू., रोहतक) उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. संजीव शर्मा ने स्वागत भाषण करते हुए विश्वविद्यालय की ओर से सभी का स्वागत किया। तदुपरान्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि आज का विषय राष्ट्रीय अस्मिता के रक्षण का है। भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति के प्रामाणिक इतिहास के तथ्य को समाज के सामने रखने के उद्देश्य से यह सम्मेलन आयोजित किया गया है। इतिहास विज्ञान है क्योंकि इतिहासकार नए प्रामाणिक तथ्यों को समाज के सामने रखता है। उन्होंने कहा कि कैथल वह स्थान है जहां ऋग्वेद के कठ-कपिष्ठल शाखा का प्रणयन हुआ है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि साहित्य साक्ष्य को प्रमाण न मानने का दुष्परिणाम है कि साहित्य की व्यापक दृष्टि को हम नहीं समझ पाते हैं। महाकवि कालिदास को हमें समाजिक तथा वैज्ञानिक दृष्टि से देखना चाहिए। कालिदास की कृतियों में भूगोल तथा इतिहास का वर्णन भी मिलता है अतः इसके बारे में भी छात्रों को अवगत करवाना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. बी. के. जैन ने कहा कि इतिहास केवल कथा नहीं अपितु सभ्यता का विकास है। अंत में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. जगत नारायण ने सभी अतिथियों एवं गणमान्यों का विश्वविद्यालय की ओर से धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् के अधिकारी एवं सदस्य, विश्वविद्यालय के समस्त प्राध्यापक तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

महामहिम राज्यपाल ने किया अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन

इतिहास मनुष्य का सच्चा शिक्षक है, इतिहास से सीख मिलती है- महामहिम राज्यपाल

दिनांक 10.10.2022 को कार्यक्रम का उद्घाटन महामहिम श्री बंडारू दत्तात्रेय (राज्यपाल, हरियाणा सरकार) के करकमलों से वैदिक मंगलाचरण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि महामहिम रोजर गोपॉल (उच्चायुक्त त्रिनिडाद एवं टोबेगो गणतन्त्र), श्री नायब सैनी (माननीय सांसद, कुरुक्षेत्र), प्रो. के.एन. दीक्षित (वरिष्ट पुरातत्त्वविद्), प्रो. मोहन चन्द (प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान्), डॉ. संजय मंजुल (संयुक्त निदेशक, पुरातत्त्व संस्थान) उपस्थित रहे।

महामहिम राज्यपाल, विशिष्ट अतिथि महामहिम रोजर गोपॉल, श्री नायब सैनी, प्रो. के.एन. दीक्षित, प्रो. मोहन चन्द, डॉ. संजय मंजुल , वि. वि. के कुलपति एवं कुलसचिव (ऊपर) छात्रों से वार्तालाप करते महामहिम राज्यपाल (नीचे)

कार्यक्रम के आरम्भ में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने महामहिम राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय को सरस्वती चित्र एवं पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया तथा सभी गणमान्यों को सम्मानित करते हुए कहा कि कुलपति पद ग्रहण करते ही हमने तीन कार्यों का संकल्प लिया है जिसमें पहला कठ-कपिष्ठल शाखा का पुनरुद्धार, दूसरा विश्वविद्यालय को विश्व का सबसे बड़ा शोध केन्द्र बनाना एवं तीसरा सरस्वती सभ्यता के विकास में सहयोग देना। जब पुरातत्त्व शास्त्री एवं संस्कृत के विद्वान् साथ-साथ एक ही बात को नहीं कहेंगे तब तक इतिहास पुष्ट नहीं होगा।

कार्यक्रम के मुख्यातिथि महामहिम राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय जी ने कहा कि संस्कृत विश्वविद्यालय में आकर बहुत अच्छा लग रहा है। आशा करता हूं कि इस सम्मेलन से शैक्षणिक जगत को बहुत लाभ प्राप्त होगा। इतिहास मनुष्य का शिक्षक होता है एवं इतिहास के अध्ययन से समाज पूर्ण गतिशील होता है। आज के इस कार्यक्रम के माध्यम से शैक्षणिक सहयोग के लिए विश्वविद्यालय परिवार को बधाई देता हूं।

अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. संजीव शर्मा ने सभी अतिथियों एवं गणमान्यों का विश्वविद्यालय की ओर से धन्यवाद ज्ञापन किया । कार्यक्रम में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् दिल्ली के अधिकारी एवं सदस्य, सम्मेलन में आए विभिन्न राज्यों के शोधार्थी एवं प्रतिभागी, विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

संस्कृत विश्वविद्यालय में सम्पूर्ण हुआ तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

दुनिया की समस्त सभ्यताओं की जननी संस्कृत – डॉ. डी.पी. वत्स

दिनांक 11.10.2022 अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन विश्वविद्यालय के परिसर में आयोजित किया गया । कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में लेफ्टिनेंट जनरल डॉ. डी.पी. वत्स (सेवानिवृत) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. अभिषेक टंडन (उपनिदेशक,आई. सी. एस. एस., नई दिल्ली), प्रो. अजय जयसवाल (प्राचार्य, कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, नई दिल्ली), प्रो. समीर आनन्द (प्राचार्य, शहीद सुखदेव कॉलेज ऑफ बिजनेज स्टडीज, दिल्ली) एवं श्री सुमेर चौधरी (व्यवसायी एवं समाजसेवी) उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में मुख्यवक्ता डॉ. डी.पी. वत्स ने कहा कि किसी भी विश्वविद्यालय के छात्रों एवं समाज के विकास के लिए विभिन्न संगोष्ठी आवश्यक हैं। सभी जानते हैं कि सारी भाषाओं की जननी संस्कृत रही है। समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रो. अभिषेक टंडन जी ने कहा कि इस ज्ञानमन्थन कार्यक्रम में आकर हमें बहुत अच्छा लगा। यदि भारत के इतिहास को जानना है तो संस्कृत को जानना आवश्यक है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी ने कहा कि हमारे भारतीय वैदिक इतिहास को छुपा कर रखा गया है। वर्तमान का इतिहास सत्य नहीं है। आज आवश्यकता है कि भारतीय वैदिक राष्ट्रीय इतिहास को पाठ्यक्रमों में पढाया जाए। कार्यक्रम में आए विभिन्न राज्यों के शोधार्थी एवं प्रतिभागी, विश्वविद्यालय के समस्त प्राध्यापक एवं अधिकारीगण तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

हे शैत्य ! व्रज

कश्चिन्निस्सरतीह नैजभवनान्नैवं बहिस्त्वद्व्रयात्
कश्चित्स्नाति जलेन नो प्रतिदिनं प्रातस्सखे ! त्वद्व्रयात्।
कश्चिद्दृश्यत एव नो पथि सखे मन्ये सखे! त्वद्व्रयात्
हे शैत्य ! व्रज धन्यवादमधुना तुभ्यं प्रयच्छाम्यहम्॥01॥

हे मित्र शीत! आज कोई भी व्यक्ति घर से बाहर नहीं निकल पा रहा है। आज कोई भी व्यक्ति सुबह सुबह जल से स्नान करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा है। आज कोई भी हमें रास्ते में तुम्हारे डर से दिखाई नहीं पड़ रहा है। अत: तुम अब जाओ तुमको मैं हृदय से धन्यवाद देता हूं।

कम्पन्ते शिशवश्च वृद्धमनुजा: रोगान्विता योषिता:
कम्पन्ते बलहीननिर्धनजनास्सद्वस्त्रहीनास्तथा।
कम्पन्ते सुधियो बुधा बलिवरा: पुण्यास्तथा पापिनो
हे शैत्य! व्रज धन्यवादमधुना तुभ्यं प्रयच्छाम्यहम्॥02॥

हे मित्र शीत ! आज बच्चे बूढे रोगी औरतें सब तुम्हारे कारण कांप रहे हैं। आज बल हीन निर्धन वस्त्रहीन लोग परेशान दिख रहे हैं। आज ज्ञानी विद्वान मूर्ख दानी पापी निशाचर खल आदि सबके के सब ठिठुर रहे हैं। अत: तुम अब जाओ तुमको मैं हृदय से धन्यवाद देता हूं।

सेवन्ते नितरां समस्तमनुजा वह्निं प्रियं सर्वदा
सेवन्ते प्रियभोजनं नवनवं चायञ्च कॉफिन्तथा।
सेवन्तेऽनुदिनं दिवातपमिह त्यक्त्वा स्वकार्याण्यहो
हे शैत्य! व्रज धन्यवादमधुना तुभ्यं प्रयच्छाम्यहम्॥03॥

हे मित्र शीत ! तुम्हारे कारण सब लोग अग्नि का सेवन करते दिख रहे हैं। कोई चाय पी रहा है तो कोई कॉफी पी रहा है। कोई उष्ण पदार्थ का सेवन कर रहा है तो कोई नित नवीन भोजन का आनन्द ले रहा है। जब थोड़ी थोड़ी धूप नकल रही है तो सब लोग अपना काम धंधा छोड़कर दिन भर धूप का सेवन कर रहे हैं। अत: तुम अब जाओ तुमको मैं हृदय से धन्यवाद देता हूं।

किञ्चिच्चिन्तय वित्तहीनमनुजस्सञ्जीवितुन्नार्हति
किञ्चिच्चिन्तय पत्निहीनमनुजस्स्थातुं न शक्नोति वै।
किञ्चिच्चिन्तय वस्त्रहीनमनुजो नूनं मरिष्यत्यहो !
हे शैत्य ! व्रज धन्यवादमधुना तुभ्यं प्रयच्छाम्यहम्॥04॥

हे मित्र शीत ! तुम थोड़ा अपने मन में विचार करो कि जिसके पास पैसा नहीं है वह कैसे जिएगा? जरा विचार करो कि जिसके पास पत्नी या प्रेमिका नहीं है वो कैसे रहेगा? जरा सोचो कि जिसके पास गर्म कपड़ा रजाई गद्दा आदि नहीं रहेगा तो मरेगा या नहीं?, अत: तुम मेरी बात मानो और अब जाओ तुमको मैं हृदय से धन्यवाद देता हूं।

सत्यं वच्मि सखे त्वदीयकृपया जातञ्जगद्दु:खितं
सत्यं वच्मि समस्तजीवनिकरा जाताश्च कष्टान्विता:।
सत्यं वच्मि दिवाकरोऽपि भयतो नो दृश्यते खेऽधुना
हे शैत्य ! व्रज धन्यवादमधुना तुभ्यं प्रयच्छाम्यहम्॥05॥

हे मित्र शीत ! अब मैं सच बोल रहा हूं कि तुम्हारे कारण अब सारा संसार परेशान हो गया है। धरती के समस्त जीव जन्तु कष्ट झेल रहे हैं। अरे तुम्हारे कारण तो भगवान सूर्य का भी दर्शन दुर्लभ सा हो गया है। अत: तुम अब जाओ तुमको मैं हृदय से धन्यवाद देता हूं।

डॉ. शशिकान्तशशिधर:
सहायकाचार्य (वेद विभाग)

पारिजात एक दृष्टि में

भगवान श्रीविष्णु जी के कूर्मावतार के समय समुद्र मंथन करने से उत्पन्न चतुर्दश रत्नों में से अन्यतम 'पारिजात' की उत्पत्ति इस प्रकार हुई। महर्षि अत्री के पुत्र दुर्वासा बड़े ही तेजस्वी मुनि हुए। वे महान तपस्वी तथा अत्यन्त क्रोध करने वाले ऋषि थे। किसी समय वे इन्द्र से मिलने की इच्छा से स्वर्गलोक गए। उस समय इन्द्र ऐरावत हाथी पर चढ़कर सम्पूर्ण देवताओं से पूजित होकर कहीं प्रस्थान करने वाले थे।

उन्हें देखकर दुर्वासा ऋषि प्रसन्न हुए और बड़े ही विनीत भाव से उन्हें एक माला भेंट की। इन्द्र ने उस माला को हाथी के गले में डाल दिया। हाथी मद से उन्मत्त हो रहा था। अत: उसने उस माला को नीचे गिरा कर मसलते हुए तोड़ दिया। फिर क्या था ? इससे दुर्वासा को क्रोध आ गया और उन्होंने शाप देते हुए कहा देवराज ! तुम त्रिभुवन की राजलक्ष्मी से सम्पन्न होने के कारण मेरा अपमान करते हो। इसलिए तीनों लोकों की लक्ष्मी नष्ट हो जायेगी।

महर्षि के शाप के प्रभाव से इन्द्र के साथ तीनों लोक श्रीहीन हो गए। यज्ञ - दान बन्द हो गए। इस प्रकार त्रैलोक के लक्ष्मी विहीन हो जाने पर दैत्य-दानवों ने देवताओं पर आक्रमण कर दिया। यज्ञ कर्म के अभाव में निर्बल पड़े देवता युद्ध में दानवों से हार गए। फिर देवताओं ने अग्निदेव को आगे कर पितामह ब्रह्मा की शरण ली गई। ब्रह्मा जी ने ऐसी परिस्थिति में जगत के कारणभूत भगवान विष्णु की शरण में जाने की सलाह दी।

ब्रह्मादि देवताओं के द्वारा स्तुति करने पर भगवान जनार्दन ने उन्हें पुन: तेज सम्पन्न बनाने का वरदान दिया। उन्होंने देवताओं को दैत्यों के साथ मिलकर समुद्रमंथन करने का आदेश दिया। भगवान विष्णु की आज्ञा शिरोधार्य कर देवताओं ने दानवों से संधि की कि समुद्रमंथन से अमृत मिलेगा। उसमें उनका भी अधिकार होगा। भगवान जनार्दन कर्मरूप धारण कर मन्दराचल पर्वत को मंथानी और वासुकी नाग को रस्सी बनाकर समुद्र मंथन आरम्भ किया गया जिसके परिणामस्वरूप 14 चतुर्दश रत्नों की प्राप्ति हुई। जो मनुष्य इन चौदहों रत्नों का नाम स्मरण करता है उसका हमेशा मंगल होता है।

लक्ष्मी कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वतरिश्चन्द्रमा,
गाव: कामदुघा: सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवाङ्गना:।
अश्व: सप्तमुखो हरिधनु: शङ्खोऽमृतं चाम्बुधे:
रत्नानीह चतुर्दश: प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥

1) लक्ष्मी 2) कौस्तुभमणि 3) पारिजात 4) वारुणी देवी (सोमरस) 5) धन्वतरि 6) चन्द्रमा 7) कामधेनु गाय 8) ऐरावतहाथी 9) रम्भादिअप्सराएँ 10) उच्चै: श्रवा घोड़े जो मन के समान गति वाले है। 11) विष्णु भगवान का धनुष 12) पाञ्चजन्यशंख 13) अमृत 14) कालकूटविष प्रकट हुए।

इस प्रकार से इन चतुर्दश (14) रत्नों की उत्पत्ति मानी जाती है। इन्हीं रत्नों में एक रत्न पारिजात है।

डॉ मदन मोहन तिवारी
सहायकाचार्य (वेद विभाग)

मेरा गांव कुराड

गांव कुराड का इतिहास - कुराड गांव हरियाणा प्रदेश के जिला कैथल से 30 कि.मी. की दूरी पर कलायत तहसील से 10 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। इसके पूर्व में खेडी लाम्बा गाँव, पश्चिम में कौल गाँव, उत्तर में दुब्बल और दक्षिण में डुढवा गाँव स्थित है। गांव कुराड़ के साथ लगते प्रसिद्ध शहरों में कैथल, नरवाना (जीन्द), और टोहाना (फतेहाबाद) शहर लगते है। सामाजिक व धार्मिक आस्था की प्रतीक उझाना गांव में बनी उझाना खाप की भव्य चौपाल का पाला 6 गांवों ने मिलकर बांधा था, जिनमें मुख्यतया उझाना, ढूंढवा, कोयल, कुराड़, अंबरसर व नेपेवाला गांव शामिल हैं। इस भव्य इमारत का निर्माण 1974-76 में हुआ था। इस चौपाल के निर्माण के पीछे एक रोचक बात यह है चौपाल की जगह यहां पर एक किला हुआ करता था, जो कि अपने आप जर्जर होकर ढह गया था।

जनसंख्या - कुराड गांव की जनसंख्या लगभग 6833 है। गाँव में महिलाओं की संख्या 3177 और पुरुषों की संख्या 3656 है। गाँव में कुल शिक्षितों की सख्या 3873 है जिसमें महिलाऐं 1452 और पुरुष 2421 साक्षर है।

शिक्षण संस्थान – गाँव में शिक्षा के स्तर को सुधारने हेतु अनेक सरकारी एवं गैर-सरकारी शिक्षण संस्थान हैं। श्री कपिल मुनी महिला महाविद्यालय (कलायत), राजकीय प्रौद्योगिकी शिक्षण संस्थान, पिन्जूपरा (कलायत), राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सर छोटु राम हाई स्कूल, एच. वी. एम. स्कूल एवं अनेक ऐसे विद्यालय हैं जिनमें आस-पास के गाँवों से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते हैं।

धार्मिक स्थल - गाँव में बाबा महिरवाल पुरी का डेरा है। जो 12 एकड में फैला हुआ है यहाँ दूर-दूर से लोग पूजा अर्चना के लिए आते हैं। गाँव में लगभग 125 वर्ष पुराना एक शिव मन्दिर भी है। जो सेठ बिहारी लाल द्वारा बनवाया गया था। हमारा गाँव देव साधु-सन्तो की तपो भूमि हैं। गाँव में हनुमान मन्दिर, दुर्गा मन्दिर, बाहरली माता मन्दिर, संत रविदास मन्दिर, दादा खेड़ा, बसंती माता मन्दिर, गोगा पीर मन्दिर, महर्षि वाल्मीकि मन्दिर इत्यादि प्रमुख हैं।

प्रमुख फसलें - गांव कुराड में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। जिसमें गेहुं ,गन्ना , जौं , धान। हमारे गांव में सबसे अधिक धान की फसल उगाई जाती है तथा गेहुं भी भरपुर मात्रा में उगाई जाती हैं। हमारे यहां फसलों की सिचांई के लिए नहर का भी प्रबंध है। कुराड़ का मुख्य व्यवसाय कृषि है। गाँव में मुख्य रुप से दो फसलें होती हैं गेहू और चावल। 5% बाड़ी, गन्ना, ज्वार, आदि की खेती भी की जाती है। गाँव से लगभग 125 साल प्राचीन नहर निकलती है जो खेतों के साथ-साथ ग्रामिणों के लिए भी जीवन रेखा का कार्य करती है।

वीरों की भूमि - कुराड़ गांव वीरों की भूमि भी है, देश की रक्षा के लिए इस गाँव के शूरवीरों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिनमें स्वर्गीय श्री प्रभु दयाल गिल (विंग कमाण्डर एयरफोर्स), श्री जय सिंह चहल (एक्स फ्लाईंग आफिसर), श्री रोहित गिल (फ्लाईंग आफिसर एन. डी. ए.), थल सेना से सेवा निवृत्त श्री जोगीराम फौजी (युद्ध - 1965, 1971), थल सेना से सेवानिवृत्त श्री रघुबीर सिंह चहल (सुबेदार) प्रमुख हैं, जो देश को अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

गाँव कुराड़ के वशिष्ट व्यक्तियों का परिचय - गाँव कुराड़ में कई महान व्यक्तियों ने जन्म लिया है, जिन्होने राष्ट्र निर्माण और समाजिक उत्थान एवं अन्य क्षेत्रों में अतुल्य योगदान दिया। उनमें से कुछ महान् विभूतियों के नाम निम्नलिखित है।

श्री तारा चन्द जी (काला)-डिप्टी डायरैक्टर एग्रीकल्चर - हरियाणा
श्री दलबीर काला - डायरैक्टर स्पोर्टस युनिवर्सिटी - कुरुक्षैत्र
श्रीमति प्रीति शर्मा -एच. सी. एस. – हरियाणा सरकार
श्री दयाकिशन चहल -एम. बी. बी. एस. (एन. आर. आई)
श्री श्याम सुन्दर जिन्दल -मैनेजर एस. बी. आई. बैंक
डॉ. कमलजीत बुरा -एम. बी. बी. एस.
श्री मन्दीप काला- असिस्टेंट एक्स.ई.एन - पावर ग्रीड इण्डिया
श्रीमति सुमन काला - लैकचरार
श्री हरिओम शर्मा -सब इंस्पैक्टर चण्डीगढ़ पुलिस
श्रीमति मिन्नी शर्मा -सब इंस्पैक्टर चण्डीगढ़ पुलिस
श्री अनुराग शर्मा - सब इंस्पैक्टर चण्डीगढ़ पुलिस
श्री इन्द्र सिंह -इंस्पैक्टर चण्डीगढ़ पुलिस
श्री रामफल गिल - कबड्डी (नैशनल स्तर पर)
श्री शमशेर जैलदार - जैवलिन थ्रो (राष्ट्रीय स्तर पर)
श्री चुड़ीया राम - रेस (नैशनल सिल्वर मैडल - अन्डर-19)
श्री विकास काला -कुश्ती (गोल्ड मैडलिस्ट - अन्डर-16)
श्री दलबीर काला - कबड्डी (राष्ट्रीय स्तर पर)

वर्तमान में गाँव में सुविधाएं - हमारे गाँव में लगभग सभी सहकारी सुविधाएँ उपलब्ध है जिससे सभी ग्रामीणों को पूर्ण लाभ प्राप्त होता है जैसे:- किसानों के लिए खाद एवं बीज बैंक, सहकारी बिजली घर, सहकारी अस्पताल, सहकारी पशु चिकित्सा केन्द्र, बच्चों के लिए आंगनवागड़ी, लघु सचिवालय (अटल सेवा केन्द्र), अखाड़ा व जिम्, खेल कूद के लिए विशाल मैदान जिसे शीघ्र ही स्टेडियम का रूप दिया जाइगा।

डिम्पल, मनीषा, नीलम, पूनम
आचार्य साहित्य (द्वितीय वर्ष)

प्रश्नमञ्जरी

(१) प्रौढ़मनोरमा किसकी टीका है ?
(क) अष्टाध्यायी (ख) चांद्रव्याकरण (ग) सिद्धान्त कौमुदी (घ) राजशेखर
(२) राजानक किसकी उपाधि है ?
(क) जगन्नाथ (ख) विश्वनाथ (ग) मम्मट (घ) राजशेखर।
(३) सरस्वती कठाभरण के लेखक कौन हैं ?
(क) आनन्द वर्धन (ख) वासुदेवानन्द सरस्वती
(ग) मधुसूदन सरस्वती (घ) भोजराज।
(४) उत्तरपुराण किस सम्प्रदाय का ग्रन्थ है ?
(क) जैन (ख) बौद्ध (ग) शैव (घ) वैष्णव
(४) 'हितोपदेश' के लेखक हैं ?
(क) भोजराज (ख) विष्णु शर्मा (ग) नारायण पण्डित (घ) सुदर्शन
(६) मैत्रेयी किस मुनि की पत्नी थी ?
(क) वशिष्ठ (ख) मैत्रेय (ग) अगस्त्य (घ) याज्ञवल्क्य
(७) काव्य मीमांस के रचनाकार कौन है?
(क) कुलशेखर (ख) राजशेखर (ग) अवन्तिसुंदरी (घ) महीधर
(८) महाभारत के मूलसंस्करण का नाम है ?
(क) भागवत् (ख) जय (ग) विजय (घ) भागवत पुराण
(९) 'काव्यालंकार' में श्लोक हैं ?
(क) 15 हजार (ख) 20 हजार (ग) 18 हजार (घ) 28 हजार
(१०) अष्टाध्यायी में 'वार्तिकों' की संख्या से अधिक है ?
(क) 5 हजार (ख) 8 हजार (ग) 12 हजार (घ) 7 हजार

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(नवमाङ्कस्य उत्तराणि)

(1) 13 (2) महाभारत (3) विश्वनाथ (4) काव्य प्रकाश (5) मयूर
(6) भरतमुनि (7) रावण वध (8) काश्मीर (9) 06 (10) भारवि

नीतिश्लोक

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः स्थिरा भवतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

भावार्थ - नीति में निपुण मनुष्य चाहे निन्दा करें या प्रशंसा, लक्ष्मी आयें या इच्छानुसार चली जायें, आज ही मृत्यु हो जाए या युगों के बाद हो, परन्तु धैर्यवान मनुष्य कभी भी न्याय के मार्ग से अपने कदम पीछे नहीं हटाते हैं।

सुभाषितानि

उपाधयायान् दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता।
सहस्त्रं पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते॥

सामान्य शिक्षक की तुलना में आचार्य दस गुना अधिक श्रेष्ठ होता है, आचार्यों की तुलना में सौ गुना अधिक श्रेष्ठ स्थान पिता का होता है और पिता की तुलना में हजार गुना श्रेष्ठ स्थान माता का होता है। अतः आचार्य, पिता, माता की श्रेष्ठता का वरीयता क्रम यही होता है।

छात्रजीवनम्

वस्तुतः छात्र जीवनम् अतीव सुखकरं भवति, अस्मिन्नेव जीवने आगामी सुखस्य आधारभूमिः स्थिता। इदं जीवनं दर्पणवत् निर्मलं निश्छलं च भवति यथा शिशुः सर्वप्रकारेण प्रसन्नः चिन्तानिर्मुक्तः स्वात्मनिलीनः परमानन्दयुक्तः भवति तथैव छात्रोऽपि विद्याध्ययनतत्परः स्वतन्त्रः जीविकाजालनिर्मुक्तः स्वस्थश्च भवति। छात्राणां भ्रमणं, शयनं, चर्चा, वार्ता, क्रीड़ा, सर्वाविनोदयुक्ता सुखकरी च भवति। तेषां चिन्ता शास्त्रे एव भवति न त्वन्येषु कार्येषु। तेषां रागः विद्यायामेव भवति नान्यत्र विलास पूर्णेषु कार्येषु। ते सदैव श्रवणं, मननं, निदिध्यासनं च कुर्वन्ति।

छात्राणां जीवने कतिचिदावश्यक- तत्त्वानि सन्ति। यदि तानि सर्वाणि तेषु सन्ति तर्हि सा छात्रावस्था परमोत्कृष्टा जायते। अथ च भावी-जीवनस्य मूलभित्तिरूपेण तच्छात्रजीवनं महदुत्तममस्ति। प्रायः विचारशीलैः मर्मज्ञैः विद्वद्भिः इदं कथ्यते यत् छात्रेषु इमानि तत्वानि आवश्यकानि। यथा-

'काकचेष्टा बकोध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पहारी गृहत्यागी विद्यार्थीपञ्चलक्षणम्'॥

यदि एषां लक्षणानाम् अनुसरणं स्वजीवने छात्र कुर्यात तर्हि तस्य छात्र जीवनं सफलम् अन्यथा अनुपयुक्तं स्यात् गच्छति। यतो हि छात्राणां जीवनं संयमस्य जीवनमस्ति। छात्राः तपस्विनः भवन्ति। ते यावद् विद्याध्ययनं कुर्वन्ति तावत् तपः कुर्वन्ति। अतएवोक्तम्- 'छात्राणामध्ययनं तपः' इति।

सरलं सौजन्ययुक्तं जीवनं मृदुव्यवहारः छात्राणां शोभावहः अस्ति इदं वर्तनं लाभदायकं भवति। सरलेन सौजन्ययुक्तेन व्यवहारेण गुरुः पितरः अन्ये वन्दनीयाः जनाश्च प्रसन्ना भूत्वा सद्विद्या प्रयच्छन्ति। यया छात्रा उन्नतिशिखरमारोहन्ति। इमान् छात्रानेव- **संबोध्य केनचिदुक्तम्-**

'अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्'॥

आलस्यमपि विद्यार्थिभि कदापि न करणीयम्। उक्तं च **'आलस्यं च मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः'**। छात्राणां कृते तु सुखस्य कल्पनाऽपि हानियुक्ता। विद्या महता तपसा साध्यते। अतएव-

'सुखार्थी चेत त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्'॥इति॥

गुरुभक्तिः, श्रद्धाः, अनुशासनं च छात्रेषु परमावश्यकम्। अभक्ताय श्रद्धारहिताय अनुशासनविहीनाय शिष्याय कदापि न दातव्या। वस्तुतः छात्राणां जीवनं यदि शुद्धं सुनियोजितं सफलं च भवेत् तर्हि राष्ट्रस्योन्नतिः निश्चिता एव। अतः सत्यमेव छात्रजीवनं देशस्य आधार भितिरस्ति।

रजनी
आचार्य (हिन्दू अध्ययन)